UNIVERSAL LIBRARY
OU_182229
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81·6/S53 D Accession No. G.H. 2056

Author शर्मा, पद्मसिंह 'कमलेश'

Title दूब के आँसू 1952

This book should be returned on or before the date last marked below.

दूब के आँसू

रचयिता
पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

सहयोगी प्रकाशन
आगरा

प्रकाशक—
सुशीला कमलेश
सहयोगी प्रकाशन
गोकुलपुरा, आगरा

Checked 1965

Checked 1969

मूल्य २)

मुद्रक—
रघुवंशी प्रिंटिंग प्रेस,
सेठ गली, आगरा

मेरे ये गीत

अपनी राष्ट्रीय कविताओं में मैंने जहाँ वर्तमान सामाजिक तथा राजनीतिक वैषम्य के प्रति विद्रोह की भावना भरी है वहाँ इन प्रेम-गीतों में अपने हृदय की व्यथा-कथा ही व्यक्त की है। इन गीतों का रचना-काल काफी लम्बा है इसलिए इनमें एक तारतम्य की खोज करना उचित न होगा। वैसे गीत स्वतः पूर्ण रचना होने से उसके लिए किसी अन्य शृंखला की आवश्यकता भी नहीं है। दूसरी बात यह है कि इन गीतों की अनुभूति को मैंने कला के आवरण से ढकने का व्यर्थ प्रयास नहीं किया। सीधे-सादे ढंग से ही अपनी बात कहदी है। कारण, मेरा विश्वास है कि गीत पर अवांछित कला का आवरण चढ़ाना उसकी हत्या करना है। तीसरी बात यह है कि प्रेम के कारण उत्पन्न निराशा का चित्रण जिन गीतों में है, वह गीत मेरी भावना की शक्ति या अशक्ति की कसौटी नहीं हैं। मेरा वास्तविक रूप उन गीतों में हैं, जिनमें वेदना के विष को पीकर आगे बढ़ने के निश्चय की सूचना है। संग्रह का प्रथम और अंतिम गीत इसका प्रमाण देंगे कि मेरा लक्ष्य निराशा में विवशता से घुट मरना नहीं है, वरन् कर्त्तव्य-रत रहकर गन्तव्य की ओर संकेत करना है। केवल इतना कह कर मैं अपने इन गीतों को आपको सौंपता हूँ।

आगरा
१५ मई १९५२

—कमलेश

करुणा और कोमलता को

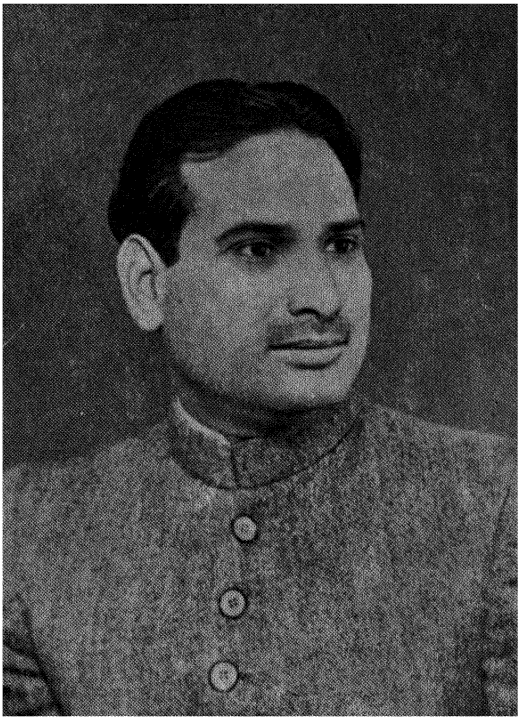

कवि

गीत-क्रम

१—मैं विजय की चाह लेकर १
२—यह उनींदी साँझ बेला ३
३—मुझको योंही जीना होगा ४
४—आज तुम्हारी याद आगई ५
५—ओ परदेशी प्यार न माँगो ६
६—क्या दूँ बोलो अपना परिचय ७
७—अब क्षमा का दान दो प्रिय ९
८—हैं नहीं अभिसार के ये दिन १०
९—मुझे प्यार के बन्धनों में न बाँधो १३
१०—नयन तो मिल जाते हैं ढीठ १५
११—बीती बातें मत याद करो १६
१२—तुम क्यों सपनो मे आती हो १७
१३—यह मेरी ही दुर्बलता थी १८
१४—रोती है क्यों रात न जाने १९
१५—दग्ध उर की बात री सखि २०
१६—मैं स्वयं ही जल रहा हूँ २१
१७—आज हँसू या रोऊँ बोलो २२
१८—आज न मुझसे बोलो रानी २३
१९—क्या न कभी तुम रोती होगी २४
२०—आँखों में आते हैं आँसू २५

२१—बरसते बादल हृदय में प्यार लेकर २६
२२—बादलों का हास २७
२३—उर में उमड़ी पीर २८
२४—आ सखि आ, हम भूला भूलें २९
२५—बाहर ज्वाला भीतर ज्वाला ३०
२६—साथी ! मंजिल दूर हमारी ३१
२७—बहुत अच्छा किया तुमने ३२
२८—बाँध संयम का न टूटे देखना ३३
२९—मेरे मीत उदास न हो ३४
३०—मेरा सुख दुनियाँ की आँखों को बन शूल गया ३५
३१—लो सुरा के सुखद प्याले तोड़ता हूँ ३६

---

*

दूब के आँसू

एक—

मैं विजय की चाह लेकर

मैं विजय की चाह लेकर
आज आया हूँ निकट जग के सुलगती आह लेकर

१

विश्व के उद्यान में मैं सुमन बन करके खिलूँगा
विश्व प्रिय के कंठ से स्रज-रूप में जाकर मिलूँगा
धन्य होगा इस क्षणिक संसार में सौन्दर्य मेरा
प्रेम का अम्बुधि तरूँगा मैं मिलन की थाह लेकर
मैं विजय की चाह लेकर

२

खोज कण-कण विश्व का भी यदि न प्रियको जान पाया
श्रेष्ठतम मुझको न यदि मेरा कहीं आराध्य पाया
नीरनिधि की वीचियों के तुल्य तो गतिवान बनकर
विश्व में जीवित रहूँगा मैं विरह का दाह लेकर
मैं विजय की चाह लेकर

३

कर सकेगा मोह-माया-जाल क्या गति-रोध मेरा
व्यर्थ हो सकता कहो प्रिय के लिये क्या शोध मेरा
विश्व का विभ्रम सभी बह जायगा उस एक क्षण में
जब बहूँगा साधना का तीव्र वारि-प्रवाह लेकर
मैं विजय की चाह लेकर

४

एक दिन निस्सीम में मिल जायगा अस्तित्व मेरा
फिर न जीवित रह सकेगा यह मधुर व्यक्तित्व मेरा
मैं विजय के गीत गाऊँगा, हसूँगा खूब जी भर
विश्व से उन्मुक्त हूँगा हर्ष-सिन्धु अथाह लेकर
मैं विजय की चाह लेकर
आज आया हूँ निकट जगके सुलगती आह लेकर

दो—

यह उनींदी साँझ बेला

यह उनींदी साँझ बेला

१

खोलकर अपने परों को
उड़ चले खग कोटरों को
हैं विकल उनके हृदय, सुनने
खगी का सरस हेला
यह उनींदी साँझ बेला

२

पहुँच कर निज-निज सदन में
शान्त होंगे मनुज मन में
प्यार से जब घरनि पूछेगी
कि 'कितना कष्ट झेला'
यह उनींदी साँझ बेला

३

स्वप्न-पूरित नींद में जब,
लीन होगा यह जगत सब
तारकों को देख तब रोता
रहेगा कवि अकेला
यह उनींदी साँझ बेला

सीन—

मुझको योंही जीना होगा

मुझको योंही जीना होगा

१

पीड़ामय काली रातों में
दुख से भीगी बरसातों में
चुपचाप अकेले ही अपने
खारे आँसू पीना होगा
मुझको योंही जीना होगा

२

संगिनि केवल आहें होंगी,
सूनी-सूनी चाहें होंगी,
जग के निष्ठुर आघातों से
छलनी मेरा सीना होगा
मुझको योंही जीना होगा

३

भर पायेंगे ये घाव नहीं
होंगे अब पूर्ण अभाव नहीं
धीरे-धीरे योंही मेरे
जीवन का पट झीना होगा
मुझको योंही जीना होगा

चार—

आज तुम्हारी याद आगई

आज तुम्हारी याद आगई

१

आधी रात, घोर सन्नाटा, मेरा मन ऊबा-ऊबा-सा,
जन-जीवन की जटिल समस्याओं में कुछ खोया, डूबा-सा,
डोल रहा था आकुल खग-सा, अस्फुट भावों की डालों पर,
सहसा मेरी भ्रान्त कल्पना प्राण! तुम्हारी झलक पागई
आज तुम्हारी याद आगई

२

चाहा ध्यान न करूं तुम्हारा, तुम्हें सदा के लिये भुलादूँ
वृश्चिक-दंशन-सी स्मृतियों को कुचल-मसलकर आज सुलादूँ
पर सजीव बन बोल उठा वह बीते युग का आत्म-समर्पण
अवहेलना तुम्हारी उर में घुमड़ घटा-सी, घहर छागई
आज तुम्हारी याद आगई

३

सुप्त धरा का कण-कण, तृण-तरु, सभी मौन, अपने में सोए
झिल्ली की झंकार मंद, झिलमिल तारे अम्बर में सोए
लेकिन मेरा रोम-रोम जाग्रत लपटों-सा. बेहोशी में
घाव हरे होगये, वेदना-कोकिल करुण विहाग गागई
आज तुम्हारी याद आगई

पाँच—

ओ परदेशी! प्यार न माँगो

ओ परदेशी! प्यार न माँगो

१

दो दिन का महेमान तुम्हारा, दुखके दिवस बिताने आया,
युग-युग की सञ्चित पीड़ाएँ अपने साथ सँजोकर लाया,
तुम हो स्वर्गिक सुमन, व्यथा की लपट न तुम्हें लगाऊँगा मैं
मुस्कानों में खिलो सलोने! आँसू का उपहार न माँगो
ओ परदेशी! प्यार न माँगो

२

उजड़ा नीड़, बसेरा छूटा, मेरे मन के खग का साथी
भटक रहा असहाय, अकेला, नहीं सहारा जग का साथी
जितने आये चले गये सब छलकर इन भोले मानव को
दुख ही जिस भिक्षुक का धन हो उससे सुख का सार न माँगो
ओ परदेशी! प्यार न माँगो

३

ढाल रहे तुम दानी बन कर, मादक मदिरा मधुर प्रणय की
शक्ति नहीं है शेष किन्तु अब मेरे भीतर रस-संचय की
मैं तीखी छुरी लेकर ही जीवन के पथ को काटूँगा
विनय यही है मेरे ऊपर तुम अपना अधिकार न माँगो
ओ परदेशी! प्यार न माँगो

दे—

क्या दूँ बोलो अपना परिचय

क्या दूँ बोलो अपना परिचय

१

मैं वह निर्जन का एक कुसुम
जो खिला और मुरझा गुम-सुम
झर गया वृन्त से आँसू-सा, अधरों पर ले सूना विस्मय
क्या दूँ बोलो अपना परिचय

२

मैं वह सरिता की एक लहर
जो क्षण-क्षण रुक-रुक, ठहर-ठहर
अपनी छोटी-सी सीमा में, कर देती निज जीवन को लय
क्या दूँ बोलो अपना परिचय

३

मैं वह छोटी-सी ओस बूँद
जो आकुल-व्याकुल, नयन मूँद
गिरकर तृण से भूपर, भ्रम-सी, क्षण भर में हो जाती है क्षय
क्या दूँ बोलो अपना परिचय

४

मैं हूँ प्रभात का वह तारा
जो अपने जीवन से हारा
है काँप रहा अस्थिरता-सा, करता अंतिम साँसें संचय
क्या दूँ बोलो अपना परिचय

५

मैं वह तरुवर का पीत पात
जो जरा भूत निज जीर्ण गात
लेकर सराय के पंथी-सा तज देता तरु को, गत विस्मय
क्या दूँ बोलो अपना परिचय !

६

मैं वह कोयल की करुण कूक
जो अपने स्वर में भरे हूक
सूनी कुंजों में प्रतिध्वनि-सी सो जाती चुप होकर असमय
क्या दूँ बोलो अपना परिचय !

७

मैं वह दुखिया की एक आह
जो बन न सकी सुखरित कराह
रुक गई कण्ठ में हिचकी-सी, करती असमंजस का अभिनय
क्या दूँ बोलो अपना परिचय !

८

मैं और न कुछ, वह विधि-विधान
जो सतत तिरस्कृत, मूक प्राण
जलता-मिटता, पथ चिन्हों-सा, कर अपने प्राणों से विनिमय
क्या दूँ बोलो अपना परिचय !

सात—

अब क्षमा का दान दो प्रिय !

अब क्षमा का दान दो प्रिय !

१

देवि ! लख गुरुता तुम्हारी,
बन गया है कवि भिखारी,
आज तो इस चिर चिरस्कृत
को तनिक सम्मान दो प्रिय !
अब क्षमा का दान दो प्रिय !

२

सजनि! मेरा सरल शिशु-मन,
कर उठा है करुण-क्रन्दन,
सान्त्वना देकर उसे
अपनी मृदुल मुस्कान दो प्रिय !
अब क्षमा का दान दो प्रिय !

३

सुमुखि ! मैं हूँ चिर प्रवासी
चिर प्रवासी, दूर वासी,
एक क्षण के ही लिये
अपनी कुटी में स्थान दो प्रिय !
अब क्षमा का दान दो प्रिय !

आठ—

है नहीं अभिसार के ये दिन अरी ओ बावली !

है नहीं अभिसार के ये दिन अरी ओ बावली !

१

जानता हूँ यह कि आकर्षण भरा तव लोक
खींचता प्रतिपल मुझे है वह तरल आलोक
किन्तु यह संघर्ष-आँधी से भरा घर-बार
है रखा उर पर शिला-सा आज मेरे शोक
आज भाते ही नहीं
मनको सुहाते ही नहीं
सरसता के दूत
सुख के सिंधु
सरस दुलार के
मधुभार के ये दिन
अरी ओ बावली !
है नहीं अभिसार के ये दिन अरी ओ बावली !

२

ज्येष्ठ की दोपहर मे तपता धरा का गात
एक क्षण को हँस, भुलस जाते सजल जलजात
ऐसे वेदना की वन्हि में जलती हुई सुकुमार
मेरी कामनाएँ खा रहीं आघात पर आघात

संगीत रुकता जारहा
है धैर्य चुकता जारहा
प्यास केवल प्यास
री! यह व्यर्थ हास-विलास
मुझसे दूर कितने
प्यार के, मनुहार के ये दिन
अरी ओ बावली!
हैं नहीं अभिसार के ये दिन अरी ओ बावली!

३

आजकी सूनी, सिसकती, काँपती-सी रात
मैं अकेला सुन न पाता अन्य जी की बात
चेतना से ले विदा की आँख मैंने बन्द
पर न मानी कर गईं तुम हृदय पर फिर घात
बेकली में खो गया
दुख-भार दूना होगया
चुभने लगे फिर शूल से
हाँ शूल और त्रिशूल से
मनुजता की हार के
संहार के ये दिन
अरी ओ बावली!
हैं नहीं अभिसार के ये दिन अरी ओ बावली!

४

सो रही-सी सृष्टि भी कुछ हो रही भयभीत
सुन नहीं पड़ता कहीं भी पंछियों का गीत
भूँकते हैं श्वान या प्रहरी लगाते बोल
दूर मुझसे प्रीति में बेचैन मेरा मीत
कितना विवश हूँ आज मैं
इस रुग्ण, मूढ़ समाज में
संताप से भरपूर
अपनी वेदना में चूर
मुझसे दूर ही रक्खो
वसंत-बहार के ये दिन
अरी ओ बावली !
हैं नहीं अभिसार के ये दिन अरी ओ बावली !

नौ—

मुझे प्यार के बन्धनों में न बाँधो

मुझे प्यार के बन्धनों में न बाँधो

१

गगन में लगा गूँजने गीत मेरा
जिसे सुन द्रवित होगया मीत मेरा
लुभाते रहे जो मुझे रंग फीके
सजनि! वह गया अब समय बीत मेरा

असीमित जलधि की पिपासा लिए मैं
ससीमित सलिल के कणों में न बाँधो
मुझे प्यार के बन्धनों में न बाँधो

२

सुमुखि! अब अधिक यों न निजको छलो तुम
वृथा मत विरह की अनल में जलो तुम
रहे पंथ जो एक, दो हो रहे अब
चुनो पंथ अपना, उसी पर चलो तुम

सकल विश्व की वेदना से विकल मैं
अकेले हृदय के व्रणों में न बाँधो
मुझे प्यार के बन्धनों में न बाँधो

३

चिरन्तन पथिक दूर जाना मुझे है
स्वयं भाग्य अपना बनाना मुझे है
न रुकते चरण, मैं बढ़ा जारहा हूँ
अकेला कि ध्रुव ध्येय पाना मुझे है

दिशा-काल के बन्धनों से परे मैं
अमर हूँ, विनश्वर क्षणों में न बाँधो
मुझे प्यार के वन्धनों में न बाँधो

इस—

नयन तो मिल जाते हैं ढीठ किन्तु यह मन मिलता ही नहीं

नयन तो मिल जाते है ढीठ किन्तु यह मन मिलता ही नहीं

१

बाग़ मे आती रोज़ बहार
सजाती डाल-डाल उपहार
कली के अधरों पर रख अधर
भ्रमर करते रहते मनुहार
कली खिलकर हो जाती फूल किन्तु यह मन खिलता ही नहीं
नयन तो मिल जाते हैं ढीठ किन्तु यह मन मिलता ही नहीं

२

जलधि में उठती नित्य हिलोर
चूमती है दिगंत के छोर
धरा के कण-कण को सोल्लास
दिया करती है रस में बोर
सुन जिसे हिल जाते पाषाण किन्तु यह मन हिलता ही नहीं
नयन तो मिल जाते हैं ढीठ किन्तु यह मन मिलता ही नहीं

३

रूपसी राका कर शृंगार
लुटाती भर अंचल में प्यार
दूर करके जग-जग का शोक
पिलाती सरस सुधा का सार
फूट खिलते जिससे भू-गगन किन्तु यह मन खिलता ही नहीं
नयन तो मिल जाते हैं ढीठ, किन्तु यह मन मिलता ही नहीं

ग्यारह—

बीती बातें मत याद करो

बीती बातें मत याद करो

१

आहों को आज न रोने दो
उर की धड़कन को सोने दो
पलकों की सूनी दुनिया को
मत आँसू से आबाद करो
बीती बातें मत याद करो

२

सोचो मत पिछली भूलों को
हंसकर अपना लो शूलों को
कोमल फूलों की आशा में
मत व्यर्थ समय बरबाद करो
बीती बातें मत याद करो

३

जग को त्योहार मनाने दो
हंसकर मस्ती से गाने दो
तुम दर्द भरे स्वर में मुझ से
अब मत कोई फ़रियाद करो
बीती बातें मत याद करो

बारह—

तुम क्यों सपनों में आती हो

तुम क्यों सपनों में आती हो

१

जब सांस सदा को छूट चुका,
सौभाग्य-सितारा टूट चुका,
तब क्यों पागल प्राणों को तुम
आशा की झलक दिखाती हो
तुम क्यों सपनों में आती हो

२

जब शुष्क रसों का सोत हुआ
दुख ही दुख ओत प्रोत हुआ
तब क्यों मेरे मरु-उर में तुम
तृष्णा की आग लगाती हो
तुम क्यों सपनों में आती हो

३

जब नियति हमें कर दीन चुकी
जीवन की निधियाँ छीन चुकी
तब क्यों ममता के बन्धन से
तुम मुझे जकड़ती जाती हो
तुम क्यों सपनों में आती हो

तेरह—

यह मेरी ही दुर्बलता थी

यह मेरी ही दुर्बलता थी

१

मुझको सुखका संसार मिला,
चिर वाञ्छित सुन्दर प्यार मिला,
पर पल भर को अपना न सका
यह मेरी ही दुर्बलता थी

२

सम्मुख अमृत का सागर था
युग का प्यासा मेरा उर था
पर एक बूँद भी ले न सका
यह मेरी ही दुर्बलता थी

३

जीवन अक्षय प्रकाश पाया,
वह मुझको अपनाने आया
पर एक किरण भी छू न सका
यह मेरी ही दुर्बलता थी

चौदह—

रोती है क्यों रात न जाने

रोती है क्यों रात न जाने

१

निज उर में भर दिन की हलचल,
ताप-तप्त जग को कर शीतल,
अन्धकार का भार युगों से
ढोती है क्यों रात न जाने
रोती है क्यों रात न जाने

२

प्रेमी के उर हर्ष-मिलन का,
विरही के उर शोक-जलन का,
बीज एक ही साथ बिसुध हो
बोती है क्यों रात न जाने
रोती है क्यों रात न जाने

३

महाशून्य को आलिंगन कर,
व्यथासिक्त अपने जीवन भर,
शत-शत घाव हृदय में लेकर
सोती है क्यों रात न जाने
रोती है क्यों रात न जाने

पन्द्रह—

दग्ध उर की बात री सखि !

दग्ध उर की बात री सखि !

१

कौन है जिससे कहूँ मैं
चिर तिरस्कृत मौन हूँ मैं
उमड़ती रहती निरन्तर
नयन में बरसात री सखि !
दग्ध उर की बात री सखि !

२

कूकता मधुमास आता,
विश्व नूतन हास पाता,
कुहर-म्लान सदैव मेरे
किन्तु सायं-प्रात री सखि !
दग्ध उर की बात री सखि !

३

दीर्घ यात्रा, पथ अपरिचित,
पग शिथिल, उर व्यथित-शंकित,
और इस पर झुक गई
असमय अँधेरी रात री सखि !
दग्ध उर की बात री सखि !

सोलह—

मैं स्वयं ही जल रहा हूँ

मैं स्वयं ही जल रहा हूँ

१

क्षार कर अरमान अपने
रुदन मय कर गान अपने
ले उपेक्षा-निधि हृदय में
व्यथित पथ पर चल रहा हूँ
मैं स्वयं ही जल रहा हूँ

२

जल गयी मम प्रणय-होली
रिक्त है अब प्राण-झोली
विगत भूलों पर निरन्तर
मैं युगल कर मल रहा हूँ
मैं स्वयं ही जल रहा हूँ

३

अब नहीं पड़ती मुझे कल
हो रहा है भार पल-पल
दुख-अनिल में धातु-सा मैं
दीन होकर गल रहा हूँ
मैं स्वयं ही जल रहा हूँ

सत्रह—

आज हँसू या रोऊँ बोलो

आज हँसूँ या रोऊँ बोलो

१

यह जीवन भी क्या है रानी
दुख-सुख-मिश्रित राम कहानी
पीड़ा-सागर की लहरों में
उतराऊँ या खोऊँ बोलो
आज हँसूँ या रोऊँ बोलो

२

जिस दिन तुमने प्यार किया था
अपना तन-मन वार दिया था
उसकी सुधि कर शून्य निशा में
जागूँ या मैं सोऊँ बोलो
आज हँसूँ या रोऊँ बोलो

३

बेसुध-सा अपने में जग है
मेरे आगे दुर्गम मग है
विष की प्याली पीलूँ या फिर
जीवन-दीप सजोऊँ बोलो
आज हँसूँ या रोऊँ बोलो

अठारह—

आज न मुझसे बोलो रानी !

आज न मुझसे बोलो रानी !

१

अब मैं चुप होकर बैठा हूँ
जीवन-निधि खोकर बैठा हूँ
रहने दो वह गाँठ पुरानी
हठ करके मत खोलो रानी !
आज न मुझसे बोलो रानी !

२

यह मेरी आँखों का पानी
जग की नज़रों में नादानी
तुमतो जग की समझ-तुलापर
ये मोती मत तोलो रानी !
आज न मुझसे बोलो रानी !

३

आह लिए श्वासों में अविरल
चाह लिए प्राणों में प्रतिपल
जाग रहा हूँ मैं जलने को
तुम तो सुख से सोलो रानी!
आज न मुझसे बोलो रानी !

उन्नीस—

क्या न कभी तुम रोती होगी

क्या न कभी तुम रोती होगी

१

प्रथम मिलन के अरमानों का
प्यार भरे मादक गानों का
कर-कर ध्यान, अश्रु-मुक्ता की
माला क्या न पिरोती होगी
क्या न कभी तुम रोती होगी

२

संध्या समय खिन्न उर होकर
निर्निमेष, व्याकुल, आहें भर
क्या न लौटते हुए खगों को
देख चेतना खोती होगी
क्या न कभी तुम रोती होगी

३

रजनी की नीरवता-हाला
पी, बनता जब जग मतवाला
मुझसी व्यथित न तुम भी क्या तब
क्रुद्ध नियति पर होती होगी
क्या न कभी तुम रोती होगी

बीस—

आँखों में आते हैं आँसू

आँखों में आते हैं आँसू

१

पूछ रहा जग क्यों रोता है
पागल क्यों व्याकुल होता है
निर्मम क्या जाने किस पीड़ा
को बाहर लाते हैं आँसू
आँखों में आते हैं आँसू

२

मैं क्या कोई खुद रोता हूँ
मैं क्या खुद व्याकुल होता हूँ
लगती है जब ठेस हृदय में
पलकों पर छाते हैं आँसू
आँखों में आते हैं आँसू

३

यदि मैं रोता हूँ तो क्या है
व्याकुल होता हूँ तो क्या है
इस भारी दिल को कुछ हलका
केवल कर पाते हैं आँसू
आँखों में आते हैं आँसू

इक्कीस—

बरसते बादल हृदय में प्यार लेकर

बरसते बादल हृदय में प्यार लेकर
कवि यहाँ बैठा व्यथाका भार लेकर

१

बादलों को भी हुआ है शोक
बुझ गया है प्यार का आलोक
व्यथा जो उनकी पड़ी थी मौन
बेबसी में बह चली बेरोक
बेबसी में प्रणय रोता हार लेकर
कवि यहाँ बैठा व्यथा का भार लेकर

२

विश्व क्या जाने कि क्या है प्रीति
क्रूर क्या समझें प्रणय की रीति
प्रेमियों के बीच बन व्यवधान
सालती रहती जगत की नीति
प्रेम जीता वेदना का सार लेकर
कवि यहाँ बैठा व्यथा का भार लेकर

३

बरसते हैं मेघ देते तोष
भर रहे रीते धरणि के कोष
सृष्टि में जीवन खिला ज्यों फूल
पर नहीं कवि को तनिक संतोष
बह उठा उर आँसुओं की धार लेकर
कवि यहाँ बैठा व्यथा का भार लेकर

बाईस—

बादलों का हास

बादलों का हास
घूमता उद्भ्रान्त प्रेमी-सा सरल वातास

१

तृषित जग की साधना का यह सजल परिणाम
छागया आकाश में बनकर जलद अभिराम
चित्त में उल्लास भरता चंचला का लास
बादलों का हास

२

प्रकृति ने पाई मनोरम छविमयी नव शक्ति
विश्व पुलकित हो रहा है बढ़ रही अनुरक्ति
चञ्चुओं में झूलता जल-बिन्दु का विन्यास
बादलों का हास

३

चिर वियोगी हृदय की आधार-हीना पीर
रुक गयी रस मय क्षणों में पा स्व परिचित तीर
तृप्त प्राणों में उमड़ती चिर अपरिचित प्यास
बादलों का हास

तेईस—

उर में उमड़ी पीर

उर में उमड़ी पीर

१

मानस में पावस ऋतु आली
नयनों में असिताभ घनाली
पीड़ा मय पलकों की प्याली
बिंधे हुए हैं मेरी रग-रग
में विद्युत के तीर
उर में उमड़ी पीर

२

रिमझिम-रिमझिम बादल बरसा
वसुधा विहँसी, कण-कण सरसा
प्राण-पपीहा व्याकुल तरसा
कहाँ और किससे माँगू मैं
आज स्वाँति का नीर
उर मे उमड़ी पीर

३

आज सुहासिन डाली-डाली
बोल रही है कोयल-काली
पर रूठे मेरे वनमाली
व्याकुलता बढ़ती है क्षण-क्षण
हूँ मैं व्यथित अधीर
उर में उमड़ी पीर

चौबीस—

आ सखि आ, हम झूला झूलें

आ सखि आ, हम झूला झूलें

१

नन्हीं-नन्हीं बूँदें आईं
मोती-सी तरु-तृण पर छाईं
एक नई मादकता लाईं
इस तन्मयता की बेला में
तन्मय हो सब सुध-बुध भूलें
आ सखि आ, हम झूला झूलें

२

सजनी जलने के क्षण बीते
देख भरे मधु प्याले रीते
पूरे चातक के मन चीते
अपनी तृषा बुझालें हम भी
फिर माधवी कुसुम से फूलें
आ सखि आ, हम झूला झूलें

३

आ, अन्तर के तार मिलालें,
अमर स्वरों से जग को छालें
एक दूसरे को हम पालें,
यौवन-पँग बढ़ा जीवन में
प्रणय-गगन की कोरें छूलें
आ सखि आ, हम झूला झूलें

पच्चीस—

बाहर ज्वाला भीतर ज्वाला

बाहर ज्वाला भीतर ज्वाला

१

बाहर जग का जीवन जलता
भीतर है कवि का मन जलता
जग-ज्वाला की लपटों से ही
पड़ता कवि के उर में छाला
बाहर ज्वाला भीतर ज्वाला

२

बाहर जग में दुख के बादल,
भीतर कवि के पीड़ा पागल,
जग का दुख ही तो भरता है
कवि के प्राणों में अँधियाला
बाहर ज्वाला भीतर ज्वाला

३

बाहर जग में रोदन के स्वर,
भीतर कवि के आँसू-निर्झर,
जग के आँसू-कन लेकर ही
भरता कवि करुणा का प्याला
बाहर ज्वाला भीतर ज्वाला

छब्बीस—

साथी ! मंजिल दूर हमारी

साथी ! मंज़िल दूर हमारी

१

हम जग में नव जीवन भरने
दुखित जनों के दुख को हरने
चले, मगर अब तक जगती में
छायी है दुख की अँधियारी
साथी ! मंज़िल दूर हमारी

२

चेतन मनुज भूल अपने को
ले मृगतृष्णा के सपने को
बैठ गया जड़ बनकर, उसकी
आत्मा रोती है बेचारी
साथी ! मंज़िल दूर हमारी

३

गति का नाम अमर जीवन है
निष्क्रियता ही घोर मरण है
सजग पथिक की आँखों को कब
अच्छी लगती भला ख़ुमारी
साथी ! मंज़िल दूर हमारी

सत्ताईस--

बहुत अच्छा किया तुमने दिए अभिशाप ही मुझको

बहुत अच्छा किया तुमने दिए अभिशाप ही मुझको

१

कहीं तुम भूल से मुझको अमर वरदान दे देते
अधम इस मर्त्य को मधु स्वर्ग के कल गान दे देते
बहुत संभावना थी भूल जाता यह तुम्हें सुख में
बहुत अच्छा किया तुमने दिए संताप ही मुझको
बहुत अच्छा किया तुमने दिए अभिशाप ही मुझको

२

किनारे पर कहीं यदि पहुँच जाती नाव जीवन की
तृषा यदि शान्त हो जाती युगों से विकल तन-मन की
बहुत संभावना थी पा तुम्हें अस्तित्व खो देता
बहुत अच्छा किया तुमने दिये पद चाप ही मुझको
बहुत अच्छा किया तुमने दिए अभिशाप ही मुझको

३

लिखा होता कहीं यदि भाग्य में बस पुण्य का संचय
न होता यदि मुझे दुष्कर्म के फल भोगने का भय
बहुत संभावना थी छोड़ देता मनुजता को मैं
बहुत अच्छा किया तुमने दिए जो पाप ही मुझको
बहुत अच्छा किया तुमने दिए अभिशाप ही मुझको

अट्ठाईस—

बाँध संयम का न टूटे देखना

बाँध संयम का न टूटे देखना

१

ज़िन्दगी मधुमास की उज्ज्वल छटा है
ज़िन्दगी बरसात की मादक घटा है
हर्ष से आगे बढ़ो कर्तव्य-पथ पर
साथ साहस का न छूटे देखना
बाँध संयम का न टूटे देखना

२

हृदय-चातक के लिए हो स्वाति घन तुम
प्राण-शतदल के लिए हो नव किरण तुम
मत कभी मदहोश बन जाना बिहंगिनि
नहीं नियति-शचान लूटे देखना
बाँध संयम का न टूटे देखना

३

प्यार की पहचान है चिर शक्ति-संचय
शक्ति संचय कर भयंकर मृत्यु पर पाना विजय
जागती रहना तनिक सी भूल से
अमर जीवन-घट न फूटे देखना
बाँध संयम का न टूटे देखना

उन्तीस—

मेरे मीत उदास न हो

मेरे मीत उदास न हो

१

धीरज से सह जो कुछ आवे,
मत तू मन को मलिन बनावे,
तेरे अन्तर का विषाद यह
तेरा ही उपहास न हो
मेरे मीत उदास न हो

२

क्या चिन्ता यदि विपदा घेरे
तेरा लक्ष्य सामने तेरे
प्राण-दीप जूझे झंझा से
फिर भी मंद प्रकाश न हो
मेरे मीत उदास न हो

३

जो अपनी गति का विश्वासी,
मंज़िल उसी वीर की दासी,
देख, कहीं पथ में रुकने से
तेरा व्यर्थ प्रयास न हो
मेरे मीत उदास न हो

तीस—

मेरा सुख दुनियाँ की आँखों को बन शूल गया

मेरा सुख दुनियाँ की आँखों को बन शूल गया

१

जब मैं दुख में था तब सब ने जी भर प्यार किया
सूखे अधरों पर धर मुस्कानों का भार दिया
तब मेरी प्रशस्ति के अगणित गीत गए गाये
जब मेरा भोला यौवन सूली पर झूल गया
मेरा सुख दुनियाँ की आँखों को बन शूल गया

२

रही अपूर्ण साधना जब तक सबने साथ दिया
आश्रय के हित बढ़ा कृपा का कोमल हाथ दिया
तब मेरे शुभचिन्तक बनकर सब आगे आये
जब मैं अपने जीवन-पथ की मंज़िल भूल गया
मेरा सुख दुनियाँ की आँखों को बन शूल गया

३

ऐसी दुनियाँ जो अभाव में, दुख में मेरी थी
जिसे सताया करती निशि-दिन चिन्ता मेरी थी
सुखी देखकर मुझे आज वह मुझसे रूठ गई
उसका वह अनुकूल ढंग अब बन प्रतिकूल गया
मेरा सुख दुनियाँ की आँखों को बन शूल गया

इकत्तीस--

लो सुरा के सुखद प्याले तोड़ता हूँ

लो सुरा के सुखद प्याले तोड़ता हूँ

१

आँधियाँ आईं, उड़ा मैं साथ उनके
व्याधियाँ आईं, बिका मैं हाथ उनके
किन्तु अब तू सँभल री अन्तर-पिपासा
भरा मधु का सिन्धु सारा छोड़ता हूँ
लो सुरा के सुखद प्याले तोड़ता हूँ

२

अरी, मेरे प्राण की बेहोश कोकिल
देख जग में जल रही दावाग्नि पागल
मत अधिक अब मोह-कीचड़ में समा तू
मुक्ति के पथ पर चरण मैं मोड़ता हूँ
लो सुरा के सुखद प्याले तोड़ता हूँ

३

नाश के नश्वर स्वरों के साथ भागा
जा रहा क्यों विकल मेरा मन अभागा
मैं अमरता के नए नभ का विहग बन
दिव्यता से भव्य नाता जोड़ता हूँ
लो सुरा के सुखद प्याले तोड़ता हूँ